

पद २६२

(राग-मुलतानी जिल्हा - ताल: त्रिताल)

कवन राधे छोकरे ने मोरा हार गमायो ॥ध्रु.॥ दधि खाये मटकी
फोरी पटकी । सिरके बाल तोरी ॥१॥ मानिक के प्रभु नाथ
कृष्णजी । चरनन जाऊं बलिहारी ॥२॥